Page No. 1

(a) बालाजी विश्वनाथ (1713-1720) →

यह महाराष्ट्र के चित्रपावन ब्राह्मण कुल से संबंधित थे। यह मुराजस्व के बहुत बड़े विशेषज्ञ थे, इसलिए शाहू ने इनको अपनी सेवा में शामिल किया। इनकी योग्यता से प्रभावित होकर सेनाकर्ते के पद पर आसीन कर दिया। यह पद सेनापति के ऊपर का पद माना गया है। 1713 ई० में शाहू ने इनको अपना पेशवा नियुक्त कर लिया।

इनके समय में सैय्यद बंधुओं के साथ संधि किया गया, जिसमें इस पेशवा ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। संधि शर्त के अनुसार 15000 सैनिकों की सहायता लेने की बात शामिल किया गया। चौथ और सरदेशमुखी वसूलने की बात भी शामिल किया गया। एक-दूसरे की सहायता करना भी इसमें शामिल कर लिया गया। इसलिए इस संधि को मराठों का मैग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) कहा गया है।

(b) ~~बाला~~ बाजीराव-I (1720-1740) AD: –

यह सबसे योग्य पेशवा थे। इनको लड़ाकू पेशवा कहा गया है। शिवाजी और ताराबाई के समान इन्होंने मराठा साम्राज्य को विस्तारित किया था। बाजीराव-I के द्वारा शाहू को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध कथन, "आओ हम इस पुराने वृक्ष को के खोखले तने पर प्रहार करें, शाखाएं तो स्वयं गिर जाएंगी और हमलोग मराठा पताका को कृष्णा से लेकर अटक तक फहरा देंगे।"

→ जबाव में शाहू का कथन: -

"आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं निश्चित रूप से इस कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं।"

Page No. 2

बाजीराव-I ने गुजरात और मालवा के साथ बुंदेलखंड को भी जीत लिया। बुंदेलखंड की विजय इनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी के साथ बाजीराव- I का प्रेम संबंध था।

इतिहासकारों के अनुसार वह प्रशासन में भी हस्तक्षेप करती थी। इसलिए इतिहास में बाजीराव - I की आलोचना किया गया।

- इस पेशवा ने शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध पद्धति छापामार युद्ध प्रणाली का सबसे अधिक प्रयोग किया था।
- इसने हिन्दू पद- पादशाही का सर्वाधिक विस्तार किया था।
- इसने अपनी शक्ति को प्रदर्शित करते हुए मुहम्मदशाह रंगीला के समय दिल्ली पर आक्रमण कर दिया था।

(C) बालाजी बाजीराव (1740-1761) :- इनको इतिहास में नानासाहब कहा गया है।

- इनके समय में पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- इसी के समय में 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था।
- यह अंतिम महत्वपूर्ण पेशवा था। इन्होंने छत्रपति के साथ 1750 में संगोला की संधि किया परिणामस्वरूप पेशवा का पद वंशानुगत हो गया। इसने हैदराबाद के निजाम को पराजित करके 1752 में झलकी की संधि किया।

परिणामस्वरूप हैदराबाद का कुछ क्षेत्र इसको प्राप्त हुआ।

पानीपत का तृतीय युद्ध (14 Jan 1761) →

यह युद्ध मराठा और नादिरशाह

का सेनापति अहमदशाह अब्दाली के बीच हुआ। जिसमें मराठे पराजित हो गये। अहमदशाह अब्दाली अफगानी था। लूटपाट के उद्देश्य से यह आक्रमण किया था। इस युद्ध में मराठा तोपखाना का नेतृत्व इब्राहिम खाँ गार्दी ने किया था।

- इस युद्ध में मराठों की तरफ से वास्तविक सेनापति सदाशिव राव भाऊ थे जबकि नाममात्र का सेनापति विश्वासराव भाऊ था।

- इस युद्ध में कुशल नेतृत्व का अभाव, सीमित संसाधन, आम जनता की सहानुभूति प्राप्त नहीं होना और अहमदशाह अब्दाली की कुशल युद्ध नीति ने मराठों को पराजित कर दिया और इसी पराजय के कारण इस पेशवा की भी मृत्यु हो गई।

(d) <u>माधव नारायण राव</u> (1761 - 1772) ई० →
पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद मराठों की स्थिति को इस पेशवा ने सुधारने का प्रयास किया था। और बहुत हद तक सफल भी होते जा रहा था। 1772 में इसकी मृत्यु हो गई। इसके बारे में कहा गया है पानीपत के तृतीय युद्ध ने जितना क्षति नहीं पहुँचाया, उससे कई गुणा अधिक क्षति इसकी असामयिक मृत्यु ने पहुँचा दिया।

(e) <u>नारायण राव (1772 - 1773)</u> →
इसके समय में एक नये चरित्र रघुनाथ राव या राघोबा का उदय हुआ जो इस पेशवा के चाचा थे, जिन्होंने नारायण राव की हत्या कर दिया और अंग्रेजों के शरण में चला गया।

Page No. (4)
Date

(f) माधव नारायणराव - II (1774-1795) :- माधव राव की विधवा गंगाबाई ने जिस पुत्र को जन्म दिया उसी को माधव नारायण राव - II के नाम से पेशवा बनाया गया। प्रशासन को चलाने के लिए 12 व्यक्तियों का प्रशासनिक संगठन बनाया गया, जिसको बारभाई कहा गया है। इसमें महादजी सिंधिया और नाना फड़नवीश सबसे अधिक शक्तिशाली थे।

- नाना फड़नवीश का मूल नाम बालाजी जनार्दन भानु था। इनको मराठों का मैकियावेली कहा गया है।
- इस पेशवा के समय मराठा साम्राज्य कई भागों में विभाजित हो गया है। जैसे -

राज्य	वंश
सतारा	छत्रपति
पूना	पेशवा
कोल्हापुर	ताराबाई
ग्वालियर	सिंधिया
बड़ौदा	गायकवाड़
इंदौर	होल्कर
नागपुर	भोंसले

- महादजी सिंधिया और नाना फड़नवीश के नियंत्रण से ऊबकर इस पेशवा ने आत्महत्या कर लिया। इसके पूर्व राघोबा ने अंग्रेजों के साथ संधि किया था।

(g) बाजीराव - II (1796-1818) - अंतिम पेशवा। यह रघुनाथ राव का पुत्र था। मराठों के पतन में सबसे अधिक जिम्मेदार इसी को माना गया है।

=×=

=x=

Lecture - 55

पेशवा

Presented by - Mamta Rani
Guest Assistant Professor
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA
Depart. of History.